मानव जीवन का लक्ष्य

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

हर व्यक्ति को अपने जीवन का लक्ष्य बनाना चाहिए। बिना लक्ष्य के आगे नहीं बढ़ा जा सकता। लक्ष्य बड़ा होना चाहिए। बड़ा लक्ष्य होने से चिन्तन करने का ढंग भी बड़ा ही होता है। जीवन में दो प्रकार के लक्ष्य हैं– एक है भौतिक समृद्धि की कामना और दूसरा है अध्यात्मिक लक्ष्य की प्राप्ति। भौतिक लक्ष्य धन, दौलत, सोना–चांदी, मकान–दुकान, पुत्र–पुत्री की प्राप्ति और अनेक भौतिक संसाधनों की प्राप्ति से सम्बन्धित है। संसार में प्रायः सभी व्यक्ति इसी भौतिक समृद्धि को प्राप्त करना चाहते हैं। बहुत ही कम लोग आध्यात्मिक समृद्धि को प्राप्त करने का लक्ष्य बनाते हैं। आध्यात्मिक समृद्धि का अर्थ है आत्मा को जानना और मानना। अध्यात्म का पथ मोक्ष का पथ है। इस पथ पर चलने वाला भौतिक समृद्धियों को नगण्य समझता है।

संसार में मनुष्य जन्म बड़ा दुर्लभ है। इसके द्वारा अविनाशी परमात्मा की प्राप्ति हो सकती है। परन्तु पता नहीं कब इसका अन्त हो जाय, इसलिये बुद्धिमान पुरुष को बुढ़ापे या जवानी के भरोसे न रहकर बचपन में ही भगवान की प्राप्ति कराने वाले साधनों का अनुष्ठान कर लेना चाहिये। इस मनुष्य जन्म में श्रीभगवान के चरणों की शरण लेना ही जीवन का एकमात्र लक्ष्य होना चाहिए। क्योंकि भगवान समस्त प्राणियों के स्वामी, सुहृद, प्रियतम और आत्मा है।

इन्द्रियों से जो सुख भोगा जाता है, वह तो जीव चाहे जिस योनि में रहे– प्रारब्ध के अनुसार सर्वत्र वैसे ही मिलता रहता है, जैसे बिना किसी प्रकार का प्रयत्न किये, निवारण करने पर भी दुःख मिलता है। इसलिये सांसारिक सुख के उद्देश्य से प्रयत्न करने की कोई आवश्यकता नहीं है। क्योकि स्वयं मिलने वाली वस्तु के लिये परिश्रम करना आयु और शक्ति को व्यर्थ गंवाना है। जो इनमें उलझ जाते हैं, उन्हें भगवान के परम कल्याण स्वरूप चरण कमलों की प्राप्ति नहीं होती। हमारे सिर पर अनेकों प्रकार के भय सवार रहते हैं। इसलिये यह शरीर–जो

भगवत्प्राप्ति के लिये पर्याप्त है– जब तक रोग–शोकादिग्रस्त होकर मृत्यु के मुख में नहीं चला जाता, तभी तक बुद्धिमान पुरुष को अपने कल्याण के लिये प्रयत्न कर लेना चाहिये। मनुष्य की पूरी आयु सौ वर्ष की है। जिन्होंने अपनी इन्द्रियों को वश में नहीं कर लिया है, उनकी आयु का आधा हिस्सा तो यों ही बीत जाता है। क्योंकि वे रात में घोर तमोगुण–अज्ञान से ग्रस्त होकर सोते रहते हैं।

इस प्रकार बीस वर्ष का तो पता ही नहीं चलता। जब बुढ़ापा शरीर को ग्रस लेता है, तब अन्त के बीस वर्षों में कुछ करने धरने की शक्ति ही नहीं रह जाती। रह गयी बीच की कुछ थोड़ी सी आयु। उसमें कभी न पूरी होने वाली बड़ी–बड़ी कामनाएं हैं, बलात् पकड़ रखने वाला मोह है और घर द्वार की वह आसक्ति है, जिससे जीव इतना उलझ जाता है कि उसे कुछ कर्तव्य–अकर्तव्य का ज्ञान ही नहीं रहता। इस प्रकार बची–खुची आयु भी हाथ से निकल जाती है।

जो अपनी ससुराल गयी हुई प्रिय पुत्रियों, पुत्रों, भाई–बहिनों और दीन अवस्था को प्राप्त पिता–माता, बहुत सी सुन्दर–सुन्दर बहुमूल्य सामग्रियों से सजे हुए घरों, कुल परम्परागत जीविका के साधनों तथा पशुओं और सेवकों के निरन्तर स्मरण में रम गया है, वह भला, उन्हें कैसे छोड़ सकता है। जो जननेन्द्रिय और रसनेन्द्रिय के सुखों को ही सर्वस्व मान बैठा है, जिसकी भोग वासनाएं कभी तृप्त नहीं होतीं, जो लोभवश कर्म पर कर्म करता हुआ रेशम के कीड़े की तरह अपने को और भी कड़े बन्धन में जकड़ता जा रहा है और जिसके मोह की कोई सीमा नहीं है– वह उनसे किस प्रकार विरक्त हो सकता है और कैसे उनका त्याग कर सकता है।

सर्वथा अनिर्वचनीय तथा विकल्परहित होने पर भी द्रष्टा और दृश्य, व्याप्य और व्यापक के रूप में उनका निर्वचन किया जाता है। वस्तुतः उनमें एक भी विकल्प नहीं है। वे केवल अनुभव स्वरूप आनन्द स्वरूप एकमात्र परमेश्वर ही हैं। गुणमयी सृष्टि करने वाली माया के द्वारा ही

उनका ऐश्वर्य छिप रहा है। इसके निवृत्त होते ही उनके दर्शन हो जाते हैं। इसलिये तुम लोग अपने दैत्यपने का, आसुरी सम्पत्ति का त्याग करके समस्त प्राणियों पर दया करो। प्रेम से उनकी भलाई करो। इसी से भगवान प्रसन्न होते हैं। आदिनारायण अनन्त भगवान के प्रसन्न हो जाने पर ऐसी कौन सी वस्तु है, जो नहीं मिल जाती? लोक और परलोक के लिये जिन धर्म, अर्थ आदि की आवश्यकता बतलायी जाती है– वे तो गुणों के परिणाम से बिना प्रयास के स्वयं ही मिलने वाले हैं। लक्ष्य के अनुरूप मानव को परिश्रम करना चाहिए। भक्त प्रह्लाद ने अपनी छोटी सी उम्र में ही भगवान के श्रीचरणों में अपने को समर्पित करके मोक्ष के पद को प्राप्त कर लिया। बड़े–बड़े योगी, ऋषि, मुनि जीवनभर तप करने के बाद भी जिस परम पद को प्राप्त नहीं कर पाते उस लक्ष्य को प्रहलाद ने प्राप्त कर लिया।